बैल की बिक्री

लेखक परिचय – हिन्दी के विनम्र सेवक और संत साहित्यकार सियाराम शरण गुप्त का जन्म सन् 1895 ई. में झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान में हुआ था। वे राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के छोटे भाई थे। गुप्त जी की प्रारंभिक शिक्षा ग्राम की पाठशाला में ही सम्पन्न हुई, किन्तु उन्होंने स्वाध्याय द्वारा अंग्रेजी, मराठी, गुजराती तथा बंगला का समुचित ज्ञान प्राप्त किया।

गुप्तजी का रुग्ण जीवन, पत्नी तथा अन्य आत्मीयों के असामयिक निधन से उनका व्यक्तित्व करुणा से भर गया था। व्यक्तिगत जीवन की करुण अनुभूतियाँ उनके साहित्य के विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुई है। कवित्व का विकास और साहित्य जगत में प्रतिष्ठा 'सरस्वती' में प्रकाशित रचनाओं के साथ प्रारंभ हुई। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण तो आपके लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। घर के धार्मिक वातावरण और गांधी-दर्शन का आपके ऊपर विशेष प्रभाव रहा है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ की छाप भी उनके साहित्य में परिलक्षित होती है। अन्तिम दिनों में वे दिल्ली में रहे। सन् 1963 में उनका निधन हो गया।

गुप्तजी केवल कवि ही नहीं थे। उन्होंने काव्य के अतिरिक्त नाटकों, निबंधों, उपन्यासों और कहानियों का भी सृजन किया है। उनकी कहानियों में सात्विक उज्ज्वलता के दर्शन होते हैं। सभी कहानियाँ गांधीवादी दर्शन से पूर्णत: प्रभावित हैं। लेखक के सरल व्यक्तित्व की तरह ही उनकी रचनाओं की वस्तु और शैली सरल है।

सियाराम शरण गुप्तजी की प्रमुख रचनाएँ निम्नानुसार हैं –

काव्य	–	आर्द्रा, विषाद, मौर्य विजय, अनाथ, नकुल, पाथेय, दूर्वादल, आत्मोत्सर्ग आदि।
नाटक	–	पुण्यपर्व।
उपन्यास	–	अन्तिम आकांक्षा, नारी और गोद।
निबन्ध संग्रह	–	झूठ-सच।
कहानी संग्रह	–	मानुषी।

'मानुषी' गुप्तजी का एक उत्तम कहानी संग्रह है। प्रेमचन्द की भाँति उन्होंने भी ग्रामीण एवं मजदूर-परिवार के चित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं। कहानियाँ ग्रामीणों की भावनाओं का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती हैं।

गुप्तजी की भाषा सरल, सुस्पष्ट और परिष्कृत है। बीच-बीच में मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता और रोचकता आ गई है। शैली भी सरल, परिमार्जित और स्वाभाविक है। हिन्दी साहित्य जगत में उनका अविस्मरणीय स्थान है

केन्द्रीय भाव

सियारामशरण गुप्तजी ग्रामीण जीवन के चित्रण में सिद्धहस्त रचनाकार हैं, प्रस्तुत कहानी ग्रामीण जीवन में व्याप्त विभिन्न सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करती है।

मोहन ऋणग्रस्त सीमांत किसान है। शिबु उसका लड़का है। सेठ ज्वालाप्रसाद का कर्जदार यह परिवार बैलगाड़ी के सहारे जैसे-तैसे अपनी गृहस्थी चला रहा था, कि दुर्भाग्य से एक बैल मर जाता है। जोड़ी टूट जाती है। शिबु इस दुर्घटना से अधिक प्रभावित होता है वैसे भी उसका मन घर-गृहस्थी में लग नहीं रहा था वह एक बैल की देखभाल से भी जी चुराने लगा। साहूकार के दबाव के कारण शिबू बाजार में अपना बैल बेचकर घर लौटता है – मार्ग में उसे डाकू मिलते हैं शिबू साहस के साथ डाकुओं का सामना करता है। डाकू लूट का धन वहीं छोड़कर भाग जाते हैं। डाकू द्वारा लुटे-पिटे लोगों में सेठ ज्वालाप्रसाद भी हैं, शिबू उन्हें बैल की बिक्री से प्राप्त धन राशि वहीं दे देता है।

लेखक ने कहानी में ऋण ग्रस्तता की समस्या को तो उठाया ही है, बैल के प्रति किसान की ममता का भी इसमें जीवंत उल्लेख है। साहूकार की हृदय हीनता और विपन्न किसान की दयनीयता के माध्यम से सामाजिक

वैषम्य को प्रकट करती यह कहानी मानवीय करुणा को रेखांकित करती है। शिबू इस कहानी का केन्द्रीय चरित्र है, जो अपने साहस के माध्यम से डाकुओं का प्रतिकार तो करता ही है गाँव के लोगों का भी विश्वास अर्जित कर लेता है। शिबू के व्यक्तित्व की तेजस्विता का निरंतर सार्थक विकास कहानी के मूल उद्देश्य को भी प्रकट करती है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ चेतनावान युवक को संवेदनशील ही नहीं बनाती, बल्कि उसे कर्त्तव्यबोध से भी अनुप्राणित कर देती है। वह बैल की बिक्री करने के बाद बैल से विलग होने की पीड़ा से पिघल जाता है। उसे लगने लगता है, जैसे बैल उसका भाई तुल्य था। वह पिता के प्रति भी करुणाद्रित हो उठता है।

शिबू के व्यक्तित्व का यह परिवर्तन उसके पिता पर साहूकार द्वारा किए गए अत्याचार की प्रतिक्रिया स्वरूप ही होता है। शिबू के चरित्र के विभिन्न कोणों को उभारती यह कथा-रचना अपने मनोवैज्ञानिक प्रभाव में व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करने वाली है। एक अकेले का साहस कभी-कभी निर्बल भीड़ में भी शक्ति संचार कर देता है। शिबू का साहस इस रूप में भी सराहनीय है, संगठन के माध्यम से अन्याय का सार्थक प्रतिरोध भी कहानी के उद्देश्य में समाहित है।

कहानी का अंत व्यंग्य की तीव्रता में होता है। शिबू ने अपने साहस के बल पर डाकुओं से अपने रुपयों की रक्षा कर ली किन्तु सेठ ज्वालाप्रसाद से वह इनकी रक्षा नहीं कर पाता है। ऋण ग्रस्तता की समस्या पर गहरा आघात करती यह कहानी अपनी दृश्य रचनाओं और भाषा में ग्रामीण परिवेश को प्रकट करती है। प्रेमचंद की कथा परंपरा में रची यह कहानी अपनी प्रस्तुति में महत्वूपर्ण है।

बैल की बिक्री

कई साल से फसल बिगड़ रही थी। बादल समय पर पानी नहीं देते थे। खेती के पौधे अकाल वृद्ध होकर असमय में ही मुरझा रहे थे। परन्तु महाजनों की फसल का हाल ऐसा न था। बादल ज्यों-ज्यों अपना हाथ खींचते, उनकी खेती में त्यों-त्यों नए अंकुर निकलते थे।

सेठ ज्वालाप्रसाद उन्हीं महाजनों में से थे! विधाता के वर से उनका धन अक्षय था। जिस किसान के पास पहुँच जाता, जीवन-भर उसका साथ न छोड़ता। अपने स्वामी की तिजोरी में निरन्तर जाकर भी दरिद्र की झोंपड़ी की माया उससे छोड़ी न जाती थी!

मोहन वर्षों से ज्वालाप्रसाद का ऋण चुकाने की चेष्टा में था, परन्तु चेष्टा कभी सफल न होती थी। मोहन का ऋण दरिद्र के वंश की तरह दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता था। इधर कुछ दिन से ज्वालाप्रसाद भी कुछ अधीर-से हो उठे थे। रुपये अदा करने के लिए वे मोहन के यहाँ आदमी-पर-आदमी भेज रहे थे।

समय की खराबी और महाजन की अधीरता के साथ मोहन को एक चिन्ता और थी। वह थी जवान लड़के, शिबू की निश्चिन्तता। उसे घर के काम-काज से सरोकार न था। बिलकुल ही न था, यह नहीं कहा जा सकता। भोजन करने के लिए यथा-समय उसे घर आना ही पड़ता था। बाप, मजूरी के पैसे लाकर किस जगह रखता है, इसके ऊपर दृष्टि रखनी पड़ती थी। पता मिल जाने पर बीच-बीच में उन्हें सफाई के हाथ से उड़ाना भी पड़ता था। ऐसे ही और बहुत काम थे। दो-चार बार उसे बैलगाड़ी किराए के लिए चलानी पड़ी थी। सम्भव है, यह बेगार चलकर और अधिक करनी पड़ती। परन्तु हाल में ही यह सम्भावना भी असम्भव हो गई है। अचानक एक दिन दो-चार घण्टे की बीमारी से हाल में ही उसका बैल चल बसा था। इस प्रकार ईश्वर ने उसके स्वच्छन्द विचरण के पथ में एक सुविधा और कर रखी थी। घर वालों के साथ

उसका वही सम्बन्ध जान पड़ता था, जो खेती के साथ उन बादलों का होता है, जिनके दर्शन ही नहीं होते। यदि कभी होते भी हैं तो आए हुए धान्य को खेत में ही सड़ा देने भर के लिए।

परन्तु बादल चाहे जैसी शत्रुता रखें, खेती के लिए उनसे प्यारी वस्तु और कोई नहीं होती। मोहन भी शिबू का विचार इसी दृष्टि से करता था। सोचता था, अभी बच्चा है। हमेशा ऐसा ही थोड़े रहेगा। जब वह शिबू की कोई बात आई-गई कर जाता तब उसे अपने मृत पिता की याद आ जाती। उसने भी अपने पिता को कम नहीं खिझाया था। पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का सबसे बड़ा साधन कदाचित् बच्चे को प्यार करना ही है! शिबू का यथेच्छाचार क्षमा करते समय प्रायः मोहन का हृदय गद्‌गद हो उठता था।

उस दिन कलेवा करके शिबू बाहर निकल रहा था। मोहन ने पीछे से कहा-लल्लू! आज मुझे एक जगह काम पर जाना है। बैल की सार साफ करके तुम उसे पानी पिला देना।

शिबू ने पिता की ओर मुड़कर कहा-मुझसे यह बेगार न होगी। मुझे भी एक जगह जाना है।

मोहन जानता था कि काँच की तरह सीधी गरमी दिखाकर इसे झुकाने की इच्छा रखना मूर्खता है। विनती के स्वर में बोला-बेटा, मुझे काम है; नहीं तो तुमसे क्यों कहता? कौन बहुत देर का काम है।

शिबू उसी तरह अविचल कण्ठ से बोला-थोड़ी देर का काम हो या बहुत देर का, मुझे वाहियात कामों की फुरसत नहीं है।

मोहन झुँझला पड़ा। क्रुद्ध होकर बोला-कैसा है रे! बैल को पानी पिलाना वाहियात काम बताता है। किसानी न करेगा तो क्या बाबू बनकर डाकखाने में टिकट बेचेगा?

"ठीक तो कहता हूँ, नाराज क्यों होते हो? कितनी बार कहा-इसे बेच दो, अकेला बँधा-बँधा खा रहा है। सार साफ करो, पानी पिलाओ, भूसा डालो। इधर-से-उधर बाँधों, उधर-से-इधर। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। किसी काम आता हो तो बात भी है!"

"चुप रह ! घर में जोड़ी न होती तो इतनी बातें बनाना न आता। बैल किसान के हाथ-पैर होते हैं। एक हाथ टूट जाने पर कोई दूसरा भी कटा नहीं डालता। मैं इसका जोड़ मिलाने की फिक्र में हूँ; तू कहता है-बेच दो। दूर हो, जहाँ जाना हो चला जा। मैं सब कर लूँगा।"

"जा तो रहा ही हूँ। मैं कुछ ऐसा दबैल नहीं हूँ।" हँसकर कहता हुआ शिबू घर के बाहर हो गया। मोहन कुछ देर ज्यों-का-त्यों खड़ा रहकर, बड़बड़ाता हुआ उठा और जाकर बैल को थपथपाने लगा। शिबू ने उसकी जो अवज्ञा की थी मानो उसकी क्षति-पूर्ति करने के लिए अपने हृदय का समस्त प्यार ढालने लगा।

उस दिन मोहन ने सार की सफाई और अच्छी तरह की। बैल को पानी पिलाने ले गया। तो सोचा इसे नहला दूँ। उजड्ड लड़के ने बैल का जो अपमान किया था, उसे वह उसके अंतस्तल तक से धो देना चाहता था। नहला चुकने पर अपने अँगोछे से पानी पोंछा, बाँधने की रस्सी को भी पानी से धोना न भूला। सार में बाँधकर भूसा डाला। तब भी मन की ग्लानि दूर न हुई, तो भीतर जाकर रोटी ले आया और टुकड़े-टुकड़े करके उसे खिलाने लगा। वह कहा करता था कि जानवर अपनी बात समझा नहीं सकते, परन्तु बहुत-सी बातें आदमियों से अधिक समझते हैं। इसलिए वह अनुभव कर रहा था कि बैल उसके प्रेम को अच्छी तरह हृदयंगम कर रहा है।

इस तरह आज इतना समय लग गया, जितना लगना न चाहिए था। यह बात उसे उस समय मालूम हुई जब ज्वालाप्रसाद के आदमी ने आकर बाहर से पुकारा-मोहन है?

मोहन सुनकर सन्न-सा खड़ा रह गया। उसे शिबू पर गुस्सा आया! अगर वह पाजी बैल का उसार कर देता तो वह इस आदमी को घर थोड़े मिलता। शंकित मन से बाहर निकल कर बोला-कौन, रामधन भैया! आओ, कुछ खा पी लो।

रामधन ने रुखाई से कहा-हमें फुरसत नहीं है। इसी दम मेरे साथ चलो। तुम-जैसे छँटे हुए आसामी से भी किसी का पाला न पड़ा होगा। तुम्हारे पीछे फिरते-फिरते पैरों में छाले पड़ गए, परन्तु मालिक साहब के दर्शन ही नहीं होते।

मोहन ने देखते ही समझ लिया, मामला ठीक नहीं है। चुपचाप भीतर से लाकर अँगोछा कन्धे पर डाला और उसके पीछे हो लिया।

रास्ते में मोहन ने फसल खराब होने की बात शुरू की। किसानों का गुजारा किस तरह हो रहा है, इस बात की ओर संकेत किया। एक पैसे का सुभीता नहीं है, यह भी स्पष्टत: कहा। रामधन मुँह भारी किए हुए सुनता रहा। मानो उसके मुँह में भी छाले पड़ गए थे। जब उत्तर देना नितान्त आवश्यक हो गया, तब संक्षेप में कह दिया-मालिक से कहना।

मोहन ने कहा - हमारे मालिक तो ...

''चुप रह दुष्ट!''-रामधन ने कहा। कहने का अभिप्राय यह था-मालिक-मैं नहीं हूँ। उच्चारण-भंगिमा का अभिप्राय यह था-मालिक हूँ तो मैं। ''बड़ी देर की बकबक लगाए है। चुका नहीं सकता तो कर्जा लिया ही किसलिए था?''

रामधन के साथ वह ज्वालाप्रसाद की कोठी पर जा पहुँचा।

ज्वालाप्रसाद ने अपने स्वर में संसार-भर का प्रभुत्व भर कर कहा-वादे बहुत हो चुके। अब हमारे रुपये अदा कर दो, नहीं तो अच्छा न होगा!

मोहन ने कहा-मालिक की बातें! खाने को मिलता नहीं रुपये कहाँ से आएँ?

बातों-ही-बातों में ज्वालाप्रसाद की जीभ की ज्वाला बेहद बढ़ उठी। 'मूर्ख', 'बेईमान' आदि जितनी उपाधियों से एकदम वह निरीह मण्डित हो उठा।

मोहन घर न जा सका। रुपये अदा कर दो और चले जाओ, बस इतनी ही बात थी।

शिबू ने तीसरे पहर घर आकर देखा-दद्दा नहीं हैं। मालूम हुआ-सवेरे ज्वालाप्रसाद के आदमी के साथ गए थे। दोपहर की रोटी खाने भी नहीं आए।

शिबू झपाटे के साथ घर से निकलकर ज्वालाप्रसाद के यहाँ जा पहुँचा। पिता को मुँह सुखाए, पसीने-पसीने एक जगह बैठा देखा। बोला-चलो। आज रोटी नहीं खानी है?

आवाज सुनकर दूर से ज्वालाप्रसाद ने कहा-कौन है शिबूआ? दाम लाया या यों ही लिवाने आ गया।

शिबू ने अपने कर्कश कंठ को और भी कर्कश करके कहा-अपनी रुपहट्टी लोगे या किसी की जान? अरे, कुछ तो दया होती! बूढ़े ने सवेरे से पानी तक नहीं पिया। तुम कम-से-कम चार दफे भोजन ठूँस चुके होगे।

मोहन लड़के का ढंग देखकर घबरा उठा। बोला-अरे ढोर, कुछ तो समझ की बात कर। किससे किस तरह बोलना चाहिए, आज तक तुझे यह शऊर न आया।

''न आने दो। चलो, उठो। मैं तुम्हें यहाँ कसाई की गाय की तरह मरने न दूँगा। रामपुर की हाट में सोमवार को बैल बेचकर उनकी कौड़ी-पाई चुका दूँगा।''-कहकर शिबू ने पिता का हाथ पकड़ा और उसे झकझोरता हुआ साथ ले गया।

ज्वालाप्रसाद हत्बुद्धि होकर ज्यों-के-त्यों बैठे रहे। उन्होंने शिबू के जैसा निर्भय आदमी न देखा था। उनके मुँह पर ही उन्हें कसाई बनाया गया! गुस्सा की अपेक्षा उन्हें डर ही अधिक मालूम हुआ। वे भी उसी हाट में रामपुर जा रहे थे। आजकल डाकुओं का बड़ा जोर था। वह शिबुआ भी तो कहीं डाकुओं में नहीं है। कैसा ऊँचा पूरा हृष्ट-पुष्ट पट्ठा है! बोलने में किसी का डर नहीं; चलने में किसी का बन्धन नहीं। दिन-भर फिर किसी काम में ज्वालाप्रसाद का मन नहीं लगा। बार-बार उसका तेज तृप्त चेहरा उन्हें याद आता रहा।

दो दिन में ही ऐसा जान पड़ने लगा-मानो मोहन बहुत दिन का बीमार हो। दिन-भर वह बैल के विषय में ही सोचा

करता। रात को उठकर कई बार बैल के पास जाता। दिन में और लोगों के सामने अपना प्रेम पूर्णरूप से प्रकट करते हुए उसे संकोच होता था। रात के एकान्त में उसे अवसर मिलता, बैल के गले से लिपटकर प्रायः वह आँसू बहाने लगता। यदि कभी शिबू उसका यह आचरण देख लेता तो उसे ऐसा जान पड़ता मानो वह कोई अपराध कर रहा हो।

हाट जाने के एक दिन पहले उसने शिबू से कहा–एक बात बेटा, मेरी मानना। बैल किसी भले आदमी को देना जो उसे अच्छी तरह रखे। दो–चार रुपये कम मिले तो खयाल न करना।

शिबू बिगड़कर बोला–तुम्हारी तो बुद्धि बिगड़ गई है। जब देखो 'बैल–बैल' की रट लगाए रहते हो। मैं मर जाऊँ तो भी शायद तुम्हें बैल के जितना रंज न हो। बैल जिए या भाड़ में जाए, मुझसे कोई मतलब नहीं जो ज्यादा दाम देगा, मैं उसी को बेच दूँगा। हमारा ख़्याल कौन रखता है? मैं भी किसी का न रखूँगा। उस कसाई के रुपये उसके मत्थे मार दूँ, मैं तो इतना ही चाहता हूँ, बस।

मोहन चुपचाप सुनता रहा। थोड़ी देर बाद एक गहरी साँस लेकर वहाँ से हट गया।

जिस समय बैल की रस्सी खोलकर शिबू हाट के लिए जा रहा था, वहाँ मोहन न था। किसी काम के लिए जाने की बात कहकर वह पहले ही बाहर चला गया था।

× × ×

बैल बेच कर शिबू घर लौट रहा था। रुपये उसकी अण्टी में थे तो भी आज उसकी चाल में वह तेजी नहीं थी, जो जाते समय थी। न जाने कितनी बातें उसके भीतर आ–जा रही थीं। बैल के बिना उसे सूना–सूना मालूम हो रहा था। आज के पहले वह यह बात किसी तरह न मानता कि उसके मन में भी उस क्षुद्र प्राणी के लिए इतना प्रेम था। मनुष्य अपने–आपके विषय में जितना अज्ञानी है, कदाचित् उतना और किसी विषय में नहीं है। बार–बार उसे बैल की सूरत याद आती। उसके ध्यान में आता मानो बिदा होते समय बैल भी उदास हो गया था। उसकी आँखों में आँसू छलक आए थे। बैल का विचार दूर करता तो पिता का सूखा हुआ चेहरा सामने आ जाता। बैल और पिता मानो एक ही चित्र के दो रुख थे। लौट–फिरकर एक के बाद दूसरा उसके सामने आ जाता था। आह, उसका पिता इस बैल को कितना प्यार करता था! उसे अनुभव होने लगा कि वह बैल उसका भाई ही था। एक ही पिता के वात्सल्य–रस से दोनों पुष्ट हुए थे। जो पिता जानवर के लिए इतना प्रेमातुर हो सकता है, वह उसके लिए न जाने क्या करेगा? सोचते–सोचते उसका हृदय पिता के लिए आर्द्र हो उठा। हाय! वह अब तक अपने ऐसे स्नेहशील पिता को भी न पहचान सका। उसके हृदय का औद्धत्य आज अपने–आप पराजित हो गया था।

घने वन की छाती पर, पत्थर की पक्की सड़क, दोनों ओर के वृक्षों की छाया का उपभोग करती हुई, निर्जन और बस्ती की परवाह न करके, बहुत दूर तक चली गई थी। दूर–दूर तक आदमी का चिह्न तक दिखाई न देता था। बीच–बीच में कुछ हिरन छलाँगें मारते हुए सड़क पार कर जाते थे। अचानक शिबू ने देखा–एक जगह बहुत–सी बैलगाड़ियाँ ढिली हुई हैं। एक ओर की निर्जनता के आधार पर ही दूसरी ओर की सघनता अवलम्बित है। मानो यही दिखाने के लिए ऊँची सड़क के दोनों ओर लगातार नीची खंदकें चली गई थीं। दो–तीन सौ आदमी उन खन्दियों में चुपचाप दूर तक श्रेणीबद्ध बैठे हुए थे। शिबू ने समझा, सड़क पर साहूकार के आदमी हैं। कुछ वसूल कर लेने के लिए इन आदमियों को परेशान कर रहे हैं। साहूकार का विचार आते ही उसका गर्वित हृदय विद्रोही हो उठा। विचारों की शृंखला छिन्न–भिन्न हो गई। वह तेजी से चलने लगा।

''कौन है, खबरदार, खड़ा रह!''

शिबू ने देखा-पुलिस के सिपाहियों की पोशाक में बन्दूकें लिए हुए पाँच आदमी हैं। मुँह कपड़े से इस तरह बाँधे हुए हैं कि सूरत साफ दिखाई न दे सके। बीच सड़क पर एक कपड़ा बिछा हुआ है। उस पर रुपये, पैसे और गहनों का ढेर लगा है। शिबू को समझने में देर नहीं लगी-डाकू हैं, सिपाही नहीं। दिन-दहाड़े यहाँ लूट हो रही है। सड़क के नीचे खन्दियों में जो लोग बैठे हैं वे लुट चुके हैं। डाकुओं ने धन के साथ मानो उनकी गति और वाणी भी अपहृत कर ली है।

हाँ, तो-एक डाकू फिर से कड़ककर बोला-कौन है, चला ही आ रहा है? खड़ा हो जा। रख दे जो कुछ तेरे पास हो।

शिबू ने देखा-अब रुपये जाते हैं। उसे रुपयों का मोह कभी न था। रुपया-पैसा उड़ाना ही उसका काम था! परन्तु ये रुपये-ये रुपये किस तरह आए हैं, यह बात वह अभी-अभी अनुभव करता आ रहा था। एक क्षण के हिस्से में उसे पिता का सूखा हुआ चेहरा याद आया और दूसरे क्षण उस महाजन का जिसने रुपये चुकाने के लिए उन्हें तीसरे पहर तक भूखा-प्यासा रोक रखा था। ज्यादा विचार करने का अवसर न था। वह छाती तान कर खड़ा हो गया। बोला-मैं रुपये नहीं दूँगा।

बोलने वाला डाकू शिबू का सुदृढ़ कंठ-स्वर सुन स्तम्भित हो गया। इतने आदमी अभी-अभी लूटे गए हैं; इस तरह तो कोई नहीं कह सका।

दूसरा डाकू बन्दूक का कुन्दा मारने के लिए उस पर झपटा। शिबू ने बन्दूक के कुन्दे को इस तरह पकड़ लिया जिस तरह सँपेरे साँप का फन पकड़ लेते हैं। अपने को आगे ठेलता हुआ वह बोला-तुम मुझे मार सकते हो, परन्तु रुपये नहीं छीन सकते। ये रुपये मेरे पिता के कलेजे के खून में तर हैं। मेरे जीते-जी महाजन के सिवा इन्हें कोई नहीं ले सकता। यह कहकर शिबू ने अपने पूरे वेग के साथ निकल जाना चाहा। तब तक पाँचों डाकुओं ने घेरकर उसे पकड़ लिया। वह उच्च कण्ठ से फिर चीत्कार कर उठा। छोड़ दो, मैं रुपया नहीं दूँगा।

शिबू का चीत्कार सुनकर लुटे हुए लोग खन्दियों में उठकर खड़े हो गए। देखने लगे-कौन है, जो प्रत्यक्ष मौत का सामना कर रहा है।

डाकुओं ने एकदम देखा-वे केवल पाँच हैं और दो-तीन सौ आदमी उनके विपक्ष में उठ खड़े हुए हैं। उन्हें विस्मय करने का भी अवसर न मिला कि उन्होंने बन्दूक के बल पर एक-एक दो-दो करके इतने आदमी कैसे लूट लिए हैं। यदि ये इसी उजड्ड की तरह बिगड़ खड़े हों, तो कौन इनका सामना कर सकता है! भय और साहस संक्रामक वस्तुएँ हैं। शिबू का साहस देख कर उधर लुटे हुए लोगों का भय भी दूर हो रहा था। देखने तक का समय न था, परन्तु डाकुओं ने स्पष्ट देख लिया-एक साथ सब लोगों के भाव बदल गए हैं। उन लोगों में से कुछ खन्दियाँ पार करके सड़क तक भी नहीं आ सके कि डाकू बन्दूकें हाथ में लिए हुए द्रुतगति से सड़क के नीचे उतर गए। लूट का माल उठाने में समय नष्ट करने की अपेक्षा अपने प्राण लेकर भागना ही उन्हें अधिक मूल्यवान प्रतीत हुआ। थोड़ी ही देर में वे लोग आँखों से ओझल हो गए।

लोगों ने आकर शिबू को चारों ओर से घेर लिया। अधिकांश स्त्री-बच्चे और पुरुष अब तक भय के मारे काँप रहे थे। रोग की तरह दूर हो जाने पर भी भय शरीर को कुछ समय के लिए निःशक्त कर रखता है। स्त्रियाँ शिबू को आशीर्वाद दे रही थीं-बेटा, तेरी हजारी उम्र हो! परन्तु शिबू इस समय भी अपने आपे में न था। वह सोच रहा था कि इनमें अधिकांश ऐसे आदमी हैं, जो रुपये के लिए बुरे-से-बुरे काम कर सकते हैं। रुपया ही इनका सब-कुछ है। उसी रुपये को इन्होंने इस प्रकार कैसे लुट जाने दिया?

भीड़ में से एक आदमी निकलकर शिबू के पास आया। बोला-कौन है, शिब माते? तुमने आज इतने आदमियों को...।

शिबू ने कहा–ज्वालाप्रसाद है। शरीर पर धोती के सिवा कोई वस्त्र नहीं। डाकुओं ने रुपये–पैसे के साथ उसके कपड़े भी उतरवाकर रखवा लिए थे। उसे देखते ही उसका मुँह घृणा से विकृत हो उठा। अण्टी से रुपये निकालकर उसने कहा–बड़ी बात, शिबू माते तुम्हें आज यहीं मिल गए। लो, अपने रुपये चुकते कर लो। अब लुट जाए तो मैं जिम्मेदार नहीं।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. खेतों के पौधे असमय में ही क्यों मुरझा रहे थे?
2. महाजन का नाम क्या था?
3. किसान के हाथ–पैर किसे कहा गया है?
4. शिबू अपना बैल बेचने कहाँ जाता है?
5. डाकुओं की कुल संख्या कितनी थी?
6. मोहन रामधन के साथ कहाँ गया?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. मोहन शिबू के विषय में क्यों चिंतित था?
2. मोहन को अपने स्वर्गीय पिता का स्मरण क्यों हुआ?
3. शिबू द्वारा बैल का अपमान करने पर मोहन की क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. बैल को बेचने के लिए जाते हुए मोहन ने शिबू से क्या कहा?
5. शिबू ने डाकुओं का प्रतिकार किस प्रकार किया?
6. ज्वालाप्रसाद ने मोहन से क्या कहा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. मोहन शिबू को बैल बेचने से क्यों मना करता है?
2. दद्दा के दोपहर में न आपने पर शिबू ने क्या किया?
3. शिबू के द्वारा किए गए व्यवहार की ज्वालाप्रसाद पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
4. बैल के बेचने का निश्चय होते ही मोहन की हालत कैसी हो गई?
5. बैल को बेचने के पश्चात् शिबू की मानसिक स्थिति का चित्रण कीजिए।
6. शिबू का चरित्र चित्रण कीजिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   ''भीड़ में से एक आदमी निकलकर शिबू के पास आया। ..... अब लुट जाए तो मैं जिम्मेदार नहीं।''

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए -

   अन्तस्तल, प्रेमातुर, सज्जन

2. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए -

   स्त्री-पुरुष, यथासमय, क्षतिपूर्ति

3. निम्नलिखित शब्दों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -
   1. जो किसी से भयभीत न हो।
   2. जिसे ज्ञान न हो।
   3. जिसके पास धन नहीं है।
   4. जो क्षय न हो।

4. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए -
   1. बादल समय पर पानी नहीं देते थे। (विधान वाचक)
   2. सेठ ज्वालाप्रसाद अच्छे महाजन थे। (निषेध वाचक)
   3. शिबू बाबू बनकर डाकखाने में टिकट बेचेगा। (प्रश्न वाचक)
   4. मोहन बैल को बहुत प्यार करता है। (विस्मयादि वाचक)

5. आज्ञावाचक वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताइए।

योग्यता-विस्तार

1. शिबू जैसा चरित्र समाज में आपको दिखलाई देता हो तो उसकी विशेषताएँ बतलाइए।
2. सियारामशरण गुप्त और प्रेमचंद की कहानियों में कथानक व चरित्र चित्रण सम्बन्धी कुछ समानताएँ हैं उन्हें लिपिबद्ध कीजिए।
3. शिबू के चरित्र को आधार मानकर किसी नए कथानक को केन्द्र में रखकर लघुकथा लिखिए।

शब्दार्थ

अनुच्छादित = प्रभावित, सीमित होना। **अकाल वृद्ध** = समय के पूर्व कमजोर, नष्ट हो जाना। **विधाता** = परमात्मा। **सरोकार** = सम्बन्ध। **कृतज्ञता** = उपकार का बदला। **दबैल** = डरा हुआ, दबा हुआ। **बाहियात** = व्यर्थ के काम। **अंतस्तल** = हृदय में, मन में। **प्रभुत्व** = शक्ति, दंभ। **निरीह**= कमजोर। **कर्कश कंठ** = दुखी, करुणा भरी आवाज। **हतबुद्धि** = बुद्धिहीन। **अण्टी** = जेब, धोती के कोने में दबी। **गर्वित** = गर्व से भरा। **अपहृत** = लूट ली, छीन ली। **विकृत** = बिगड़ा स्वरूप।